समीक्षा

भारतीय जीवन दृष्टि

लेखक प्रो. बृज किशोर कुठियाला

प्रो. बृज किशोर कुठियाला द्वारा रचित 'भारतीय जीवन दृष्टि 'नामक इस पुस्तक का मनन व चिन्तन के क्षेत्र में विशेष स्थान है इन लेखों के माध्यम से उन्होंने अपनी अंतर्दृष्टि से पाठकों के लिए नवजीवन के कई द्वार खोल दिए। वस्तुतः हमारे विचार जितने शुद्ध होंगे उतने ही हमारे कर्म श्रेष्ठ होंगे। कर्मों की अशुद्धि का से बड़ा कारण रहा हमारी पराधीनता। सदियों हम गुलाम रहे। परिणाम स्वरूप पारस्परिक मतभेद व मन भेद बढ़ते चले गए। हम इन सब बातों के इतने अभ्यस्त हो गए कि हमें पता ही नहीं चला स्वतंत्र होने के पश्चात भी हम उन्हीं नीतियों और कुरीतियों को अपना कर चलते रहे। जिन्हें अंग्रेजों ने आरोपित किया था। हम अपने संस्कार तक भूल गए। हमारी सारी संस्कृति व सभ्यता पुस्तकों तक ही सीमित रह गई। हमारे समाज के पतन से उत्पन्न स्थिति के कारण संवाद की परंपरा नष्ट होती चली गई। परिणाम स्वरुप हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा।

लेखक के शब्दों में 'त्याग और वैराग्य के स्थान पर भौतिक विकास के सुखों में लिप्त होना व्यक्तिगत और सामूहिक उद्देश्य बना। कुल की परंपराएं स्थिर हुई, संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ और व्यक्तिवाद को बढ़ावा मिला'। एक ही धर्म को मानने वालों में भी आपसी मतभेद पाया गया और इसे बढ़ावा दिया मीडिया ने। हम देखते हैं कि टीवी पर भी आने वाले लोग संवाद नहीं करते। देखा जाए तो बुद्धिजीवी वर्ग ही इसके लिए उत्तरदायी है क्योंकि बुद्धिजीवियों की निष्क्रियता के कारण ही हमारा समाज आगे नहीं बढ़ पाया।

रिश्ते हैं ....कि जहां समाज संवाद शील है वहां समस्याओं की कमी है। लेखक ने कहा भी है कि संवाद हीनता अफवाहों और गलतफहमियों को जन्म देती है जिससे संबंध खराब होते हैं, और परिणाम स्वरूप नई समस्याएं जन्म लेती हैं। जनजातीय समाज का विश्लेषण करते हुए कहते हैं, 'जनजातीय समाज की सामाजिक रचनाएं अनोखी है। बच्चों के पालन पोषण और विवाह की पद्धतियां, न्याय व्यवस्था, कृषि या शिकार से प्राप्तियों में सामूहिक सहभागिता-----सभी विषयों में जनजाति समाज की बहुत सी रचना एंव रीति -रिवाज मानव की मौलिक संवेदना के ऊपर आधारित है। जनजाति वर्ग में वर्ग भेद ऊंच-नीच छुआछूत और स्त्री पुरुष के भेद भी कम है' कहने का अभिप्राय यह है कि सांस्कृतिक धरातल पर हमें उनसे कुछ सीखना चाहिए।

क्रमशः

नारी: प्रकृति की श्रेष्ठ रचना में लेखक ने कहा है,'भारतीय समाज में ही धीरे-धीरे नारी का स्थान पुरुष की तुलना में गौण होता गया'। यह भारतीय संस्कृति की विकृति है उसकी पहचान नहीं। तात्पर्य है कि हमें नारी की श्रेष्ठता को स्वीकार करना ही होगा अन्यथा हमारा समाज कभी विकास नहीं कर सकता।

उदीयमान भारत की वैश्विक भूमिका में भारत के अग्रणी होने पर विशेष ध्यान दिया है। इसमें वे कहते हैं, 'प्राकृतिक संसाधनों में भारत विश्व में अग्रणी है। अपना देश वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा क्रियाशील जनतंत्र है। शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। अध्यात्म और दर्शन में भारत के पास सर्वश्रेष्ठ धरोहर है। अतः हमें आशा करनी चाहिए कि आने वाले समय में भारत संसार के अग्रणी देशों में गिना जाएगा। और समस्त संसार को शांति का संदेश देगा।

त्योहारों की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि सामाजिक बदलाव लाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने त्योहारों को अपने जीवन में प्राथमिकता प्रदान करें। त्योहारों के माध्यम से ही हम एक दूसरे से जुड़ते हैं। अपनी संस्कृति अपनी परंपराओं से नई पहचान बनाते हैं। और इन्हें मनाने से हमारी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होती है। सबसे बड़ी बात यह है कि हर कोई अपने अतीत को भूल कर इन त्योहारों में इतना मगन हो जाता है कि उसकी मानसिक स्थिति पहले से अधिक बेहतर होने लगती है।

विवेकानंद जी के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि विवेकानंद जी ने अनेक महान मूल्यों को प्रतिष्ठापित किया। उनके कृत्य ही युवा वर्ग के लिए महान संदेश के द्योतक हैं अर्थात अगर हम सच में चाहते हैं कि भारतीय संस्कृति का नवोदय हो तो हमें विवेकानंद जी द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलना ही होगा।

'कर्म प्रधान है भारतीय वर्ण व्यवस्था' .....जाति प्रथा से उत्पन्न सभी सामाजिक विद्रूपताओं का उल्लेख करते हुए यही समझाने का प्रयास किया है कि अंततः कर्म ही किसी व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हैं। प्रत्येक की कार्यप्रणाली भिन्न हो सकती है परंतु उद्देश्य एक ही होना चाहिए वह है हमारा सामूहिक विकास। हमारी संस्कृति ही हमारे राष्ट्रत्व का आधार होनी चाहिए तभी हम व्यक्ति से समष्टि की ओर अग्रसर हो सकते हैं और तभी हम वसुधैव कुटुंबकम की भावना को पोषित कर सकते हैं।

आदरणीय कुठियाला जी ने नारद की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की है जो ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ रोचक भी हो सकती है |

सारांश में मैं यह कहना चाहूंगी कि अपने विचारों को पुस्तक का रूप देकर जनमानस का कल्याण किया है और उन्हें धर्म व संस्कृति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है। इसलिए राष्ट्रीय चेतना को विकसित करना ही हमारा प्रयास होना चाहिए।

हम एकजुट होकर अपने कर्तव्यों का पालन करें और सब के भीतर राष्ट्र प्रेम को जागृत करें अपने स्वाभिमान का दीपक जलाएं तभी हमारा जीवन प्रकाशित हो सकता है। और जहां प्रकाश है वहां कुप्रवृत्तियों रूपी अंधेरे स्वत: नष्ट हो जाते हैं। अपने विचारों को शब्द देकर, अर्थ देकर चिंतन और मनन के द्वारा जो पुस्तकीय आकार दिया है उससे जनमानस का कल्याण हो। यही कामना है। अंत में सार सूत्र में यही कहूँगी .....

'हम क्या थे,क्या हो गए हैं,क्या होंगे अभी

आओ बिचारे आज मिलकर ये समस्यायें सभी'।

बहुत -बहुत बधाई व शुभकामनाएं।

चंद्रकांता अग्निहोत्री

पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष

राजकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय

सेक्टर 11 चंडीगढ़